संधि Contd.

. अदसो मात् - 1।1।12

यह प्रगृह्य संज्ञा विधायक सूत्र है। 'अदस्' शब्द से प्राप्त 'मकार' के बाद 'इकार' और 'ऊकार' प्रगृह्य संज्ञक होते हैं।

यथा - अमी ईशाः - यह 'अकः सवर्णे दीर्घः' से होनेवाले दीर्घ का बाध करता है और पूर्वस्वरूप में ही रह जाता है।

(b) अमू आसाते - यहाँ इको 'यणचि' से 'अ+आ' का 'यण्' बाधित हुआ और 'अदसो मात्' से प्रगृह्य संज्ञा हुई और प्रकृतिभाव हुआ।

53. चादयोऽसत्वे - 1।4।57

यह निपात संज्ञा विधायक सूत्र है। सूत्र का अर्थ है द्रव्य से भिन्न अर्थ में प्रयुक्त 'चादि' (च) की निपात संज्ञा होती है। 'चादि' गण है जिसमें च, वा, ह, एव, नूनम् तथा पशु आदि शब्द कहे गए हैं। 'असत्व' का अर्थ है द्रव्य अर्थात् पदार्थ।

54. प्रादयः - 1।4।58.

यह निपात संज्ञक सूत्र है। सूत्र का अर्थ है प्र, परा, अप, सम आदि (प्रादि) का अर्थ यदि द्रव्य नहीं होता है तो उसकी निपात संज्ञा होती है।

यथा - (53 - 54) 'लोकं नयन्ति पशु मन्यमानाः' में 'पशु' शब्द का अर्थ 'सम्यक' है, यह अद्रव्यवाची है किन्तु 'पशु' शब्द जब 'जानवर' अर्थ में प्रयुक्त होता है तब द्रव्यवाची होने से उसकी निपात संज्ञा नहीं होगी। यथा - पशूनां पतिः।

Scanned with CamScanner

60. अचो रहाभ्यां द्वे — 8।4।46.

यह विधिसूत्र है। यदि 'अच्' (अइउण्, ऋऌक्, एओङ्, ऐऔच्) अर्थात् स्वर वर्ण के परे 'रकार' और 'हकार' के बाद, यदि 'यर्' को विकल्प से द्वित्व होता है। यथा – गौरी + औ = गौर्य्यौ। विकल्प पक्ष में द्वित्व नहीं होने पर 'गौर्यौ' रह जाता है।

61. ऋत्यकः — 6।1।128.

यह विधिसूत्र है। सूत्र का अर्थ है – यदि पद के अन्त में 'अक्' अर्थात् (अइउण्, ऋऌक्) ह्रस्व या दीर्घ ये वर्ण हों तो 'ऋत्' (ऋ) के बाद आनेवाले इन वर्णों का विकल्प से ह्रस्व होता है और वहाँ संधि कार्य नहीं होता है। यथा - ब्रह्मा + ऋषिः — ब्रह्म ऋषिः। वैकल्पिक पक्ष में - ब्रह्मा + ऋषिः = ब्रह्मर्षिः — यहाँ 'आद् गुणः' से गुण और 'उरण् रपरः' से रपरत्व होकर ब्रह्मर्षि रूप बना।

निम्नलिखित सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या करें –

(a) अलोऽन्त्यस्य (b) अजाद्यदन्तम् (c) अकः सवर्णे दीर्घः
(d) अदसो मात् (e) अदेङ् गुणः (f) ईदूदेद् द्विवचनं
(g) इको यणचि (h) उपपद मतिङ् (i) ङञ परूपम्
(j) एचोऽयवायावः (k) उद्भ्यां कांकुं (l) ऊकालोऽज्
(m) ओत् (n) उञः ऊँ (o) आदेः परस्य

Uma Pathak
Deptt. of Skt.
B.A. I st yr.